॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आप कैसी मेरी पवित्र माँ हैं। हे माँ! तू कितनी भोली है, तू कितनी पवित्र है। हम तेरे आङ्गन में आते हैं, तू विष्णु रूप से भी कहलाई गई है। शक्ति रूपों से भी तेरा प्रतिपादन किया गया है। माँ! तू कितनी भोली है। जब हम तेरे आङ्गन में आते हैं, तो ज्ञान और विवेक से युक्त होकर के आते हैं, माँ! वास्तव में तू हमारे हृदय का भरण कर देती है। तू, कैसी महत्ती है। तू कैसी ममतामयी है, बालक क्षुधा से पीड़ित हो रहा है, माँ तू उसे लोरियों का पान कराती हुई, उसकी क्षुधा और पिपासा को शान्त कर देती है। इसी प्रकार हे माँ! मैं तेरे द्वार पर, विवेकी बन करके आना चाहता हूँ। मुझे शक्ति दे, बल दे, ओज दे, तेज दे। जिससे माता मैं तेरी उस महान् ज्योति का दर्शन कर सकूँ। तेरी जो महान् ज्योति है, तेरी जो करूणामयी ज्योति है जिस करूणा से हे विष्णु! आप संसार का लालन पालन करते हैं। मैं भी तेरे द्वार पर आना चाहता हूँ। उस पिपासा में मैं रमण करना चाहता हूँ जिस पिपासा के लिए सदैव मानव अपने में ही परणित हो जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 579 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 654
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याग का स्वरूप	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द जी महाराज	5-19
4. महर्षि भारद्वाज श्वेताश्वेतर	पूज्यपाद-गुरुदेव	20-35
5. ऋषियों के उद्‌गार		36
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		37-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

याग का स्वरूप

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। और वे यज्ञोमयी स्वरूप हैं। मानो याग उसका आयतन है, उसका ग्रह है, उसका सदन है, और वह उसी में वास करने वाला है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का हम सदैव गुणवादन करते रहें। क्योंकि नाना देवताओं के द्वारा और अपने में देवत्व भाव को हम स्थापित करें। क्योंकि जब तक हम देवताओं के भाव और उनके क्रियाकलापों को अपने में धारण नहीं करेंगे तो हम देवत्व को प्राप्त नहीं हो सकते। इसीलिए हमें देवता बनना है और देवता वह कहलाता है जो देवत्व, जो परमपिता परमात्मा के निकटतम रहने वाला है अथवा उसे देवता कहते हैं। जो निरभिमानी है और वह चेतना के ऊपर मानो अपने में धारयामि बना रहता है। और चेतना में ही मानो वो रत्त रहता है और उसे देवत्व कहते हैं। मेरे प्यारे! यहाँ प्रत्येक मानव जब देवत्व को प्राप्त हो जाता है तो ये परमात्मा का ये अनुपम एक महान् और पवित्रता में रत्त होने लगता है। तो इसीलिए हम इन देवत्व को ऊर्ध्वा में ही ले जाने के लिए हम सदैव तत्पर रहें।

देवताओं की उपासना

आज का हमारा वेद मन्त्र यहाँ देवताओं की उपासना कर रहा है।

यहाँ वेद का मन्त्र कहीं से हमें ये प्रेरित कर रहा है क्या याग के सम्बन्ध में अपने विचार दिए जाएँ। क्योंकि **''यागाम् भवितम् ब्रह्मणम् ब्रव्हे यागाः''** मानो ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और यहाँ प्रत्येक याज्ञिक बन करके आया है। इसीलिए वेद मन्त्र कहता है, **मानव को याग करना चाहिए, देवताओं की पूजा करनी चाहिए।** और देवताओं की पूजा का अभिप्रायः यह कि वह देवता जिसकी हम पूजा करना चाहते हैं उसके गुणों को अपने में धारण करते रहें। तो वह देवताओं की पूजा कहलाती है। मानो देखो, यह आपोमयी जल का स्त्रोत है। और ये जल मानो प्राणों का एक महान् स्त्रोत माना गया है। तो मुनिवरो! देखो, वह प्राणम् ब्रह्माः प्राण के लिए जब उसका उपयोग करते हैं तो वो देवता कहलाता है। इसी प्रकार वायु ''अमृतम् देवाः'' बेटा! ये वायु अपने में देवत्व को धारण कर रही है और ब्रह्माः देखो अग्नि में ''प्रणः चक्षुः वृतम् देवत्वाम्''। मानो ये जो अग्नि देवता की उपासना मानो हम अपने में ब्रह्म ज्ञान के द्वारा और भौतिक जगत में मानो देखो, उसका उपयोग करते हुए हमें प्रायः देवत्व को प्राप्त करना चाहिए।

याग की प्रेरणा

मुनिवरो! देखो, ये याग हो रहा है। ये संसार जितना भी एक प्रकार का ये नृत हो रहा है और ये हमें दृष्टिपात आ रहा है तो ये सर्वत्र मानो एक प्रकार की यज्ञशाला है। मैंने यज्ञशाला के सम्बन्ध में कई प्रकार के तुम्हें विचार दिए हैं। हमारे यहाँ देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ भी नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। वह प्रातःकालीन जब अपने ब्रह्मचारियों सहित अपनी यज्ञशाला में याग करने के लिए उपस्थित रहते और अग्न्याधान करते हुए, मुनिवरो! उसमें चरु का मानो प्रवेश कराते हुए–वह अग्नि ''अमृतम् ब्रह्माः'' वह अग्नि उस चरु को अमृत बना देती है और वह मानो प्रसारण कर देती है। अग्नि मानो विभक्त क्रियाओं में निष्पूर्ण कहलाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, यागमय ब्रह्मणेः वृत्तम्, आचार्यों ने

बड़ी विचित्रता का एक वाक्य कहा। ब्रह्मचारी क्योंकि अपने में महान् बना करते हैं और ब्रह्मचारी वह जो ब्रह्म और चरि को जान करके मृत्यु को अपने आङ्गन से दूरी कर लेते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! हम याग किस प्रकार करें? तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या हे ब्रह्मचारियों तुम्हारे द्वारा नाना साकल्य हो, गोघृत हो और मानो समिधाओं का विशुद्ध रूप से निर्माण होना चाहिए। और उसकी स्थलियों मानो यजमान हो। अध्वर्यु, उद्गाता ब्रह्मा इत्यादियों का निर्वाचन हो। जब तुम याग करो। ये याग अपने में पूर्ण कहलाता है।

समिधाओं के द्वारा याग

मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! हम ब्रह्मचारी हैं और कहीं ऐसा अवसर हो जाए कि हम इन समिधाओं को एकत्रित न कर सकें तो याग कैसे करें। उन्होंने कहा, उस समय याग तुम, मानो अग्नि को प्रदीप्त करके अग्नि में समिधाओं के द्वारा प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, इस प्रकार तुम प्राणों की हवि प्रदान करो। मानो पवमान से अपनी आहुति प्रदान करो। जिससे मानो देखो अग्नि प्रचण्ड हो करके अग्नम् ब्रह्माः और वह याग कहलाता है। क्योंकि अग्नि स्त्रोत है और इस अग्नि को जानने वाला मानो मुनिवरो! देखो एक महान् और पवित्रता की आभा में परणित हो जाता है। ये अग्नि ही मानो देखो कन्या याग का स्त्रोत कहलाती है। तुम्हें ये प्रतीत है कि कन्या के ''अस्सुतम् वृद्धम् भवे क्रतम्''—तो वेद का एक वाक्य कहता है, क्या ये जो कन्या है, पहले द्युलोक में रहने वाली मानो देवताओं के लोक में रहती है तो देवताओं के लोक से ये पितर लोक में चली जाती है। और पितर लोक में जा करके मानो देखो कुलाधिपति को प्राप्त हो जाती है और वहाँ इसे याग करने का अधिकार प्राप्त होता है। और वह जो याग का अधिकार प्राप्त होता है यह अधिकार ''भूतम् ब्रव्हे वृतम्'' मानो देखो उस समय ये उस **सन्तान उत्पन्न करने का नाम याग माना गया है।** हमारे यहाँ याग का एक बड़ा व्यापक शब्द है और याग

अपने में अद्वितीय एक मानो देखो, एक अपने में महत्त्वदायक। तो ऋषि कहता है, क्या उस समय वो याग करने वाली वो अपने अन्तरात्मा की अग्नि को, अन्तर्हृदय की अग्नि को जागरूक करती है। और उसी जागरूकता से मानो देखो, अपने में याग करने का उसे अवसर प्राप्त होता है। क्या हमारे यहाँ प्रत्येक वस्तु को याग के रूप में परणित किया है। याग के ही रूप में हमें दृष्टिपात आता रहता है। वेद का ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य, हे ब्रह्मचारियों! तुम अग्नि को चेतन्य करो और अग्नि के द्वारा मानो देखो व समिधाओं के द्वारा याग करो। जैसे मानो देखो आत्मा का, **आत्मा की जो समिधा है, वह मुनिवरो! देखो ज्ञान है।** उसी में वो पनपता रहता है। हृदय में ज्ञानरूपी अग्नि को प्रदीप्त करना है। और माता को अपने हृदय में मानो देखो एक ऐसी अग्नि को प्रदीप्त करना है जिस अग्नि में हम याग कर सकें, हवि दे सकें। और उग्रता उसमें ला सकें जिससे देखो हमारा याग सम्पन्न हो जाए।

जल के द्वारा याग

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारियों ने कहा, हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं जब मानो देखो जब कहीं अग्नि व समिधा भी प्राप्त न हों तो देखो हम याग कैसे करें? तो उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियों! यदि मानो देखो इस प्रकार की हवि तुम्हें प्राप्त न हो, साकल्य और देखो समिधा भी न हो, तब तुम मानो देखो जल के द्वारा याग करो। यह जल अमृत है। और यही जल है, मानो देखो जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो वो तीन आचमन करता है। और तीन आचमनों से मुनिवरो! देखो वो संसार की सम्पदा को प्रभु से इच्छित करता रहता है और वह कहता है, हे प्रभु! मुझे अमृत भी प्राप्त हो, मुझे श्री भी प्राप्त हो, मुझे यश भी प्राप्त हो। मुझे संसार की सर्वसम्पदा मुझे प्राप्त हो जाएँ। तो ऐसा मानो देखो वह अपने में उद्गीत गाता हुआ यजमान कहता है, हे प्रभु! यही तो आपोमयी ज्योति है। यही तो जल है। जब मैं माता के गर्भस्थल में

विद्यमान था तो माता के गर्भस्थल में मानो देखो, यही जल ओढ़न था। और यही बिछौना था। और यही मानो देखो पासे बने हुए और मैं मेरा देखो, अन्तरात्मा मेरा ब्रव्हे, मैं शिशु उसी में वास कर रहा था। मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं था क्या वो कितनी जल की आवश्यकता है। और जल मानो देखो पासे, ओढ़न और आसन बना हुआ है। उसी जल में मैं विद्यमान व आपोमयी रहा हूँ। हे प्रभु! ''आपम् ब्रह्मेः क्रतम्'' मानो देखो, वही तो आपो कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो उस समय वो तीन आचमन करता है। वह कहता है, ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारियो! तुम मानो यदि अग्नि न हो तो इसीलिए आपो (जल) के द्वारा तुम याग करो। और ये कहो कि प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, तो ''उदानम् ब्रह्मेः क्रतम्'' मानो इस प्रकार का तुम स्वाहा उच्चारण करते रहो। ये आपो ही मानो देखो तुम्हारा जीवन है, ये प्राणवर्धक है। मुनिवरो! देखो, जब स्थावर सृष्टि को जल प्राप्त नहीं होता तो उस समय आपो ही तो उसमें प्राण देता है। आपो ही प्राण का सञ्चार करता है। और वह आपो ही प्राण का सञ्चार करके मानो देखो वह विशस्तुते और वह अपने में मानो देखो, जलतर में परणित हो जाता है। तो विचार आता रहता है, यह आपो ही तो है। हे ब्रह्मचारियों! आपो ही प्राण का उद्गीत गाने वाला है। जब मुनिवरो! देखो, प्राण सूखने लगता है, जब प्राण जाने लगता है तो आपो की आवश्यकता होती है उस समय प्राण स्वतः स्थापित हो जाता है। तो मानो देखो, वह आपोमयी जल कहलाता है। यह आपो ही जो मेरे प्यारे! देखो, मानव शरीर को पिण्ड रूप में परणित कर देता है। यह जो पिण्ड बनता है यह आपो के ही रूप में बनता है। और आपो ही इसे बनाता, निर्माणित करता रहता है। माता के गर्भस्थल में यदि वह आपो नहीं होगा तो पिण्ड नहीं होगा। मेरे प्यारे! यदि ग्रह का निर्माण करते समय यदि आपो (जल) नहीं होगा तो ग्रह का पिण्ड नहीं बनेगा। हमने बाह्य पिण्ड को, बाह्य ग्रह का ही निर्माण कर सकते हैं व आन्तरिक जगत में ही मानो अपने शरीर रूपी ग्रह का निर्माण कर सकते हैं। क्योंकि माता के गर्भस्थल में आत्मा के ग्रह का निर्माण होता

है। और ये जो मानव अपना निर्माण करता है बाह्य जगत में तो ये मुनिवरो! देखो, अपने शरीर को, अपने शरीर की रक्षा के लिए मुनिवरो! देखो, ग्रह का निर्माण करता है। तो इसी प्रकार यह निर्माण बिना आपो के नहीं हो सकता। इसीलिए आपो ही प्राण का प्रतिनिधि कहा है। इसीलिए आपो के ऊपर हमें विचार-विनिमय करना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया। ''आपाम् ब्रह्मणेः आपम् ब्रव्ही क्रतम्'' क्या ये आपो ही तो मुनिवरो! देखो प्राण का वर्धक है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने ये कहा तो मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी जब बोले कि प्रभु कहीं ऐसा हो, क्या ये आपो भी हमें प्राप्त न हो तो हम मानो याग कैसे करेंगे? उन्होंने कहा, ये मानो देखो आपो भी न हो तो तुम मानो शान्त मुद्रा में मुद्रित हो जाओ और शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके प्राणों के ऊपर अध्ययन करो। और ये कहो कि प्राणाय स्वाहाः क्योंकि **स्वाहा तो मानो देखो, इस संसार की आत्मा है, यज्ञ की आत्मा है।** मानो देखो, यज्ञ का जो आत्मा, जो स्वाहा है, वही तो तुम्हें उच्चारण करना है। जिससे मानो देखो प्राणाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा और व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। ये जो स्वाहा कह करके जब व्यान की आहुति देता है तो मेरे प्यारे! देखो पवमानाय आभा में परणित हो जाता है।

विचार आता रहता है ऋषिवर ''अमृतम् ब्रह्मेः क्रमत'' वह अमृत है। मुनिवरो! देखो वही तो अपने में धारण करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक रूढ़ियों के विषयों को जानना है। और प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान करके बेटा! देखो, घ्राण से मन्द सुगन्ध को लेना है। और मुनिवरो! देखो रसना से रसों को लेना है और त्वचा से मुनिवरो! देखो वह स्पर्शता को ले करके उनका साकल्य बनाता है। और उनको विचारते-विचारते बेटा! अन्तिम चरम सीमा पर चला जाता है। क्या मुनिवरो! देखो, वही तो अग्नि स्वरूप बना हुआ है। नेत्रों से अग्नि झर रही है और श्रोत्रों के शब्द झर रहा है। मेरे प्यारे! घ्राण इन्द्रियों से मन्द सुगन्ध झर रही है। और मुनिवरो! देखो

रसना से रसों का, रसों का स्वादन लिया जा रहा है, वह भी झर रहा है। जैसे मेघों से वर्षा झरने लगती है और वो नाना प्रकार की मानो वनस्पतियों को जन्म देती है और नाना प्रकार के व्यञ्जनों वाली बन जाती है। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो अपने में, अपनेपन में ही वो दृष्टिपात करने लगते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, ये कैसा विचित्र, मेरे प्यारे! प्रभु का नृत हो रहा है, कैसी विचित्रता में मानो देखो, हम इस संसार को, मानवीयता को दृष्टिपात कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ''यागाम् ब्रह्मेः'' वेद के ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, ब्रह्मचारियों को उपदेश देते हुए कहा, क्या इसी को तुम्हें विचारना है। मानो देखो, ये तुम्हारा याग है और यहीं तुम याग में परणित हो जाओ। मानो देखो, इसमें से तीन आभा को लेना प्रारम्भ करो। जब वैज्ञानिकजन, इस याग में परणित हो जाते हैं तो तीन प्रकार के मानो परमाणुओं को लेना प्रारम्भ करते हैं–वह मुनिवरो! देखो, सबसे प्रथम गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी। ये तीन प्रकार के परमाणु हैं जिनको ले करके बेटा! मानव विज्ञानवेत्ता बनता है और वह विज्ञान में प्रविष्ट हो जाता है और विज्ञानवेत्ता बन करके बेटा! देखो, नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। अरे! यही तो तीन परमाणु हैं–गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी। मेरे प्यारे! देखो, वायु इन परमाणुओं को गमन कराती रहती है और अन्तरिक्ष में मुनिवरो! वही परमाणु गमन करते रहते हैं जिन परमाणुओं को जान करके ऋषि-मुनि, नाना प्रकार के बेटा! यन्त्रों का और वैज्ञानिकजन इनमें परणित हो करके मेरे पुत्रो! नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं और वह द्युलोक इत्यादियों को गमनता में रमण करने लगते हैं।

विचार आता रहता है, आज मैं तुम्हें दूरी नहीं ले जाऊँगा। विचार केवल ये कि महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों, यदि तुम्हें वैज्ञानिक बनना है तो तीन प्रकार के परमाणुओं को जानो और मानो वायु को उसमें समावेश कर दो। और मानो वायु को उसमें समावेश कर दो और अन्तरिक्ष में उसे गमन करा दो। और यही मुनिवरो! देखो, नाना रूपों

में परणित होने लगेगा। यही मानो देखो प्रसारण, ध्रुवा, ऊर्ध्वा और गतिवान् और मुनिवरो! आङ्कुचन ये तीन प्रकार की, पञ्च प्रकार की प्रकृति की अभ्योगति होती है जिसमें वैज्ञानिकजन अपने में गमन करता रहता है और विचारता रहता है। तो मेरे प्यारे! हम याज्ञिक बने और वो याग मुनिवरो! देखो, हम अपनी हृदयरूपी यज्ञशाला में बेटा! स्वाहा कर करके आहुति देते रहें। देखो, जैसे ''प्रथम ब्रह्माः वर्णम्'' मेरे प्यारे! देखो, हम आपोमयी और प्राण अपान की आहुति देते हुए व्यान में प्रवेश होते हुए और उदान में मुनिवरो! देखो, समावेशता को हम परणित हो जाते हैं। तो विचार आता रहता है, ऋषि कहता है कि हम देखो, इस प्रकार का याग करें।

हृदयरूपी यज्ञशाला में याग

हे ब्रह्मचारियो! यदि तुम्हें जल भी कहीं प्राप्त न हो तो मानो देखो, अपनी हृदयरूपी यज्ञशाला में, यह जो दस प्राण हैं। इन प्राणों का साकल्य बना करके तुम प्रत्येक इन्द्रियों में समोवश हो जाओ। और इन्द्रियों का साकल्य एकत्रित करके तुम हृदय में समाहित हो जाओ। और प्रत्येक हृदय की आभा को एकत्रित करते हुए तरङ्गों को एकत्रण करके तुम वैज्ञानिक बन जाओ। और वैज्ञानिकता में जिन तरङ्गों का प्रादुर्भाव होता है—सर्वत्रता को एकत्रित करके परमात्मा के हृदय में तुम समावेशता को प्राप्त हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, हे ब्रह्मचारियो! तुम मानो देखो, वैज्ञानिक बनो। वेद मन्त्र कहता है, याज्ञिक बनना हमारा कर्त्तव्य है और याग में परणित होना, ये हमारी प्रतिभा कहलाती है। क्योंकि यहाँ संसार प्रत्येक आभा में, मानो देखो, संसार में याग हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन कराया उन्होंने कहा, ''याज्ञम् भूतम्'' तो ब्रह्मचारियों ने ये कहा हे प्रभु! आगे प्रश्न करना तो व्यर्थ है हमारा। उन्होंने कहा, आगे प्रश्न बन ही नहीं पाएगा तुमसे। क्योंकि तुम्हारे मस्तिष्क की इतनी ऊर्ध्वा गति नहीं है जो तुम आगे प्रश्न कर सको। उन्होंने कहा प्रभु, यह वाक्य तो मानो यथार्थ है परन्तु यदि हम

प्रश्न करने लगें। उन्होंने कहा, अति प्रश्न करने वाला इस मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। क्या वो प्रश्न करता रहता है और प्रश्न करने वाला प्रश्न ही करता रहता है। परन्तु देखो इन्द्रियों से परे चला जाता है और जब इन्द्रियों से परे का कोई भी महापुरुष उत्तर नहीं दे पाता तो प्रश्नकर्त्ता को अभिमान की मात्रा जागरुक हो जाती है और अभिमान ही संसार में देखो मृत्यु का कारण है। यदि अभिमान नहीं होगा तो मृत्यु नहीं होगी, इसीलिए अभिमान ही मृत्यु का मूल कहलाता है। इसीलिए आगे प्रश्न करना तुम्हारे लिए व्यर्थ है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारीजन बोले, हे प्रभु! ये तो आपने हमें ऐसा सीमाबद्ध कर दिया है कि जिससे हम मानो अपने में प्रश्न नहीं कर पाते। परन्तु हम एक प्रश्न तो कर सकते हैं प्रभु! क्या ''द्यौअम् भूः शरणम् ब्रव्हे क्रतम् चित्राम् वृथम् तस्तुतम् दिव्यम् गतम् ब्रह्माः''।

द्यौ की प्रतिष्ठिता

मेरे प्यारे! ब्रह्मचारियों ने ये प्रश्न किया और वेद मन्त्र के द्वारा उन्होंने कहा प्रभु! हम ये तो प्रश्न कर सकते हैं कि हमारा जो शब्द जो याग में परणित होने वाला जो शब्द है वो कहाँ जाता है? मेरे प्यारे! देखो, वह महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि वो शब्द तुम्हारा, द्यौ में प्रवेश हो जाता है। यदि वो तुम्हारी नम्रता से और वेद मन्त्रों की आभा में सना हुआ शब्द है, वही तो द्यौ में प्रवेश हो जाता है। उन्होंने कहा प्रभु! हमारी यहाँ आ करके सन्तुष्टि होने लगती है। परन्तु देखो ये द्यौ कहाँ प्रतिष्ठित हो जाता है। उन्होंने कहा, ये जो द्यौ है, ये मानो देखो, अग्नि और देखो मानो शब्द के मध्य में विद्यमान रहता है। जब मानो देखो, स्वाहा उच्चारण करता है यजमान और स्वाहा के साथ में ही मानो देखो, उसकी आभा निहित रहती है। तो उस मानो देखो, वेद मन्त्रों का जब उद्गीत गाया जाता है तो अग्नि की धाराओं का जन्म होता है और उसके मध्य में ही मानो देखो, ये शब्द विद्यमान रहता है। और द्यौ से भी ऊर्ध्वा में गमन करता हुआ चित्रों का स्वामित्व करने वाला है।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने, जब मानो देखो ब्रह्मचारियों ने, ऋषि और ब्रह्मचारियों का दोनों का सम्पर्क और उनकी विचारधाराओं में प्रारम्भ रहीं तो ब्रह्मचारी मौन हो गए। ब्रह्मचारी ने कहा, प्रभु! आपका जो ज्ञान है वह बड़ा अनुपम है। मानो तुम्हारी जो धाराएँ हैं उद्गीत गाने की, वह बड़ी विचित्रत्व मानी गयी हैं।

मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा ये वाक्य क्या कह रहा है कि ''यज्ञम् भवितम् ब्रह्माः'' क्या ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। परन्तु इसमें जो भी प्राणी आया है, वो याग करने के लिए आया है। मेरी प्यारी! माता याग करने के लिए आयी है। मानो देखो कन्या बन करके देवलोक में गमन करना, पितर लोकों में गमन करना और उसके पश्चात् कुलेश्वरों को प्राप्त हो करके वह देखो उपार्जन करने वाली, सन्तान को जन्म देने वाली याज्ञिक बन जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो इस सम्बन्ध में, मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता। आज का विचार-विनिमय क्या है हमारा, क्या हम मुनिवरो! देखो, अपने में प्रोक्षण करते चले जाएँ। अब मानो देखो, मेरे प्यारे देखो महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

ओ३म् दिव्याम् गतम् ब्रह्मणाः वायु रेवम् भविताः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। मानो गागर में सागर की कल्पना ही एक मानवीय जीवन कहलाता है। क्योंकि इनका बड़ा भव्य एक उपदेश और मानो हमारे अन्तर्हृदयों को उज्ज्वल बनाने वाला है। और जब मानव का हृदय उज्ज्वल हो जाता है तो महानता में परणित हो जाता है। आज हमारी ये जो वाणी जा रही है–जिस स्थली पर ये हमारी वाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और यजूंषि याग का वर्णनम् ब्रहे हमारे वैदिक साहित्य में बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है। क्योंकि यजूंषि याग में जहाँ अश्वमेध यागों का वर्णन आता रहता है वहाँ देवी याग का भी

वर्णन है जो पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे। और जहाँ देवी याग का वर्णन है वहाँ अग्निष्टोम याग, वाजपेयी याग और भी नाना प्रकार के यागों का वर्णन होता रहता है। परन्तु हमारे यहाँ देखो ये जो अश्वमेध याग है, ये हमारे देखो, यहाँ राज्य, राष्ट्र और प्रजा को दोनों को ही ये याग करने चाहिए। क्योंकि वास्तव में मेरा जो अन्तरात्मा है, आज जहाँ याग, वहाँ मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। और मैं ये कहा करता हूँ हे यजमान! तेरे ग्रह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। और मेरा अन्तरात्मा ये सदैव तेरे साथ रहता है कि तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। हमारे यहाँ देखो जिस याग, यजूंषि यागों का वर्णन हो रहा है उनमें वाजपेयी याग और अग्निष्टोम याग का वर्णन है। और अश्वमेध याग का भी वर्णन है—अश्व कहते हैं राजा को और मेध कहते हैं प्रजा को। जब राष्ट्र और प्रजा दोनों मानो सम्मिलित हो करके जब याग करते हैं तो याग अपने में सम्पन्नता को प्राप्त हो जाता है। और यही याग अपने में मानो देखो सार्थक बनता है और प्रजा अपने में सुगन्धता को अनुभव करने लगती है। जब मैं ये विचरता रहता हूँ। मैं यागों का वर्णन करता हूँ आधुनिक जगत में, राष्ट्रीयता में जब मैं परणित होने लगता हूँ तो पूज्यपाद गुरुदेव को राष्ट्र की चर्चा करता रहता हूँ। हमारे यहाँ राम देखो, राम के काल में भी अश्वमेध याग होते थे। रावण के यहाँ भी अश्वमेध याग होते। **अश्मेध याग का अभिप्रायः यही है** कि प्रजा और राजा मेल करते हुए अपने में याज्ञिक बने रहते और वही याग अपने में बड़ा सार्थक बन करके समाज को उन्नत बनाता है। परन्तु देखो एक मध्यम अश्वमेध याग का एक महत्त्व और भी माना गया है। क्या राजा और प्रजा मिल करके देखो एकोकी ''धर्मज्ञम् ब्रह्माः'' एक मानो देखो अपनी आभा को अपना करके, जिससे राष्ट्र और समाज ऊँचा बनता हो वही मानव का क्रियाकलाप और धर्म माना गया है। देखो ''धर्मणनम् ब्रव्हे क्रतम्'' जब वेदरूपी प्रकाश को अपनाने के पश्चात् मानव धर्मज्ञ बन जाता है और वही धर्मज्ञ बन करके देखो, राष्ट्र को उन्नत बनाता है। क्योंकि राष्ट्र का जब भी विनाश हुआ है, राष्ट्र में जब भी रक्तमयी क्रान्ति आयी है तो

वह नाना प्रकार की रूढ़ियों से आती है। जब ईश्वर के नामों पर नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हो जाता है और रूढ़ियाँ देखो, राष्ट्र के लिए घातक बन जाती हैं।

महाभारत काल के पश्चात्

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन कराना चाहता हूँ क्या बहुत काल से ही, महाभारत काल के पश्चात् से यहाँ ह्रास होता चला आया। मानो देखो, मेरी प्यारी! माताओं को, माता स्वीकार न करते हुए इनके ऊपर नाना प्रकार के देखो अलङ्कारिक वार्त्ताओं की वृत्तिका निहित रही। और देखो इसी प्रकार मानव समाज में भी नाना प्रकार के मानव को विभक्त करते हुए मानव को देखो, अन्धकार में पहुँचाने का प्रयास किया गया। क्योंकि राष्ट्रीयता देखो इतनी दूषित हो गयी थी राष्ट्र, राष्ट्र नहीं रहा। राष्ट्र मानो देखो, अन्धकार में चला गया। और उसका कारण ये था कि क्योंकि राजाओं का जो निर्वाचन है वह बुद्धिमानों के द्वारा नहीं हुआ। और जब बुद्धिमानों के द्वारा राष्ट्र का निर्वाचन होता है, विवेकी पुरुषों के द्वारा, त्यागी पुरुषों के द्वारा तो राष्ट्र मानो देखो अश्वमेध याग करने का उसे अधिकार होता है। वही राजा अश्वमेध याग करता है।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रगट कराते हुए कहा, क्या ये संसार मानो देखो ऐसा अधमवृत्तियों में रत्त हो गया है। मैं राष्ट्र के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं दे रहा हूँ। केवल इतना उच्चारण कर रहा हूँ, क्या आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है, वह इस प्रकार की नीति कि मेरा आसन बना रहे परन्तु ये राष्ट्र देखो, मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो होने दीजिए। परन्तु मेरी स्थली बनी रहे जिससे मैं अपने में मानो देखो पालन-पोषण अच्छी प्रकार कर सकूँ। यहाँ अपने पालन-पोषण की है, समाज के पालन-पोषण की कोई आकृतियाँ नहीं है।

विचार आता रहता है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करा रहा हूँ। ये नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं। हे राजन्! यदि तू महान् बनना चाहता

है, हे राजन्! यदि परमात्मा की वाणी को तू उन्नत बनाना चाहता है। तो तूझे रूढ़ियों के ऊपर अनुशासन करना होगा। यदि नाना प्रकार की ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ बनी रहीं तो यही रूढ़ियाँ देखो मानव के रक्त के लिए तत्पर रहती हैं और रक्तभरी क्रान्तियाँ आ जाती हैं।

आधुनिक काल

देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं आपको इसलिए वर्णन करा रहा हूँ, क्या मैं इस समाज को दृष्टिपात करता रहता हूँ। आधुनिकता में मानो स्वार्थपरता है और सुरा और सुन्दरियों में मानव रत्त हो रहा है। देखो वह द्रव्यता में देखो रत्त है। द्रव्य और सुन्दरी अमृतम् और देखो वह ''अस्सुताः वर्णम् ब्रह्मेः'' देखो सुरा में पान कर रहा है। विचार आता रहता है इसका दायित्व तो राष्ट्र के ऊपर होता है। और जब राजा राष्ट्र स्वयं, स्वयं इस प्रकार का बन जाए तो देखो इसका किसके ऊपर दायित्व हो सकता है। हे प्रभु! ब्रह्मणेः, वह तो एक प्रभु ही रह जाता है। परन्तु देखो समाज में एक-दूसरे में, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव माला में माला को धारण करते रहते हैं और माला की चर्चा करते रहते हैं। ये समाज, माला में कटिबद्ध नहीं रहा है, ये केवल देखो रूढ़िवाद में परणित है। राजा ब्रह्मज्ञानी नहीं होता। जब राजा ब्रह्मज्ञानी और विवेकी होता है और गुरुओं के द्वारा उसका निर्वाचन होता है तो राष्ट्र उन्नत हुआ करता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, मैं विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल मेरे हृदय में एक दाह बनी रहती है क्या राष्ट्र कैसे ऊँचा बने। वह मनु और कालेत्वर ऋषि का वो सिद्धान्त कहाँ चला गया देखो जो बारह-बारह वर्षों तक राजा मानो देखो, पालन करते थे। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया तप करने के पश्चात् बारह वर्ष का अनुष्ठान करके और व तपस्या करने के पश्चात् उन्होंने अयोध्या राष्ट्र को अपनाया। ऐसे महापुरुष, ऐसे राजा जब राष्ट्र का निर्वाचन करते हैं तो वह राष्ट्र पवित्र होता है। और राजा तपस्वी

होना चाहिए। और जब राजा देखो सुरा और सुन्दरियों में परणित रहता है तो मानो इसका दायित्व राष्ट्र के ऊपर नहीं। वह तो, मैं तो प्रभु से ये कहा करता हूँ, प्रभु! आप ही इसके दायित्व के अस्सुतम्, आप ही स्वामित्व है और इसकी रक्षा कीजिए प्रभु! तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं कई समय अपने हृदय में ये स्वीकार करता रहता हूँ, क्या वो जगत कहाँ चला गया। वह जगत परमात्मा की प्रतिभा में चला गया या विनाश को प्राप्त हो गया। आधुनिक काल का जो जगत है। मानो देखो, वह अज्ञानम् देखो वह वाममार्ग का काल मैं इसको कह सकता हूँ। वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करने वाला है। जो देखो, वह राजा भी उल्टे मार्ग पर है, प्रजा भी उल्टे मार्ग पर है। रूढ़ियों को महत्त्व देना, ये राष्ट्र का विनाश करना है। और रूढ़ियों को देखो अपने सम्पर्क में लाना ही रक्तभरी क्रान्ति को लाना है। इसीलिए मैं आज विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। मैं तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव के विचारों को ले करके अपने विचार व्यक्त करता रहता हूँ। जब तक राष्ट्र तपस्वी नहीं होगा और ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा उसका निर्वाचन नहीं होगा, जब तक देखो मानव समाज अश्वमेध याग में राजा परणित नहीं होगा तब तक यह समाज ऊँचा नहीं बनेगा। समाज को उन्नत बनाना है, समाज को महान् बनाना है और वो महान् जब ही बनेगा, जब तक महिमा का हमारे समीप तपस्यम् ब्रह्माः व तप अग्रणीय होगा।

यजमान को आशीर्वाद

अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाने से पूर्व हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और ग्रह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। ऐसा मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। मैं कुछ राष्ट्र की चर्चा भी कह जाता हूँ परन्तु देखो यह विशेषता नहीं। केवल मेरा तो इतना मन्तव्य रहता है हे यजमान! तेरी महानता विचित्र बनी रहे और ग्रह में सदुपयोग होता रहे। ये आज का वाक्। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर, अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार दिए। इनके विचारों में कितनी दाह बनी हुई है राष्ट्र के प्रति, कितनी महानता में ये जाना चाहते हैं। मानो देखो, इनका हृदय तो सदैव राष्ट्र के लिए आलाहित रहता है इसीलिए वे प्रभु से कहते रहते हैं हे प्रभु! तेरी अनुपम कृपा हो जाए तो मानो तेरे ऐसे-ऐसे महापुरुषों का जन्म हो जाए– राम जैसे सखा जो तपस्वियों में रत्त रहने वाले हों और तप में ही अपने राष्ट्र को ले जाने वाले हों। ऐसे महापुरुषों का जन्म होना चाहिए। और ये मानो वाममार्ग की प्रतिभा समाप्त हो जाए। सुरा और द्रव्य में मानव को रत्त नहीं रहना चाहिए। जिससे मानव अपने में महानता का दर्शन करता रहे। तो आज का विचार समाप्त।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये, क्या हमारा याग सम्पन्न हो और याग में हम परणित हो जाएँ। आज का विचार समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायु गतहम्।''
''ओ३म् रेवम् गताः वाचन्नमः''
''ओ३म् यश्शचारि ग्रहीवरुणा वायु गतम् मनु वायाः''

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो!

दिनाँक : 7 अप्रैल, 1990
स्थान : श्री विजेन्द्र सिंह त्यागी
ग्राम भटौला, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

॥ ओ३म् ॥

महर्षि भारद्वाज श्वेताश्वेतर

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। और जितना भी ये जड़-जगत, चेतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वो अनुपम हैं और वे ज्ञान और विज्ञानमयी कहलाते हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वो सीमा से रहित हैं। वो सीमा में आने वाले नहीं हैं इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महत्ती और उसके गुणों का गुणवादन करते रहते हैं। हमारे यहाँ जिस भी काल में ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हुए हैं और विचार-विनिमय उन्होंने प्रारम्भ किया। उन्होंने बेटा! देखो, पिण्ड और ब्रह्माण्ड को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया क्योंकि जो मानवीय पिण्डों में गति हो रही हैं, वही ब्रह्माण्ड में गतियाँ हो रही हैं। जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड में गतियाँ हो रही हैं, वो एक-एक परमाणुवाद में हो रही है।

ऋषि-मुनियों का चिन्तन व अन्वेषण

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है, एक समय बेटा! रेवक मुनि महाराज

से ब्रह्मचारी वृत्तिका ने एक प्रश्न किया था। क्या महाराज एक परमाणु है और उस परमाणु में ब्रह्माण्ड है, ये कैसे हो सकता है? मेरे पुत्रो! देखो वृत्तिका ब्रह्मचारी और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज की विज्ञानशाला में पहुँचे और उनकी विज्ञानशाला में बेटा! वो जो नाना ब्रह्मचारी थे। ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि, एक ही स्थली पर विद्यमान थे और यही विचार-विनिमय कर रहे थे कि परमाणुवाद क्या है? तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियो! तुम्हारे यहाँ एक परमाणु के ऊपर विश्लेषण हुआ है और उसके गर्भ को हम जानना चाहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक परमाणु का, वृत्तिका नामक परमाणु को उन्होंने जाना। उसका जो विभाजन किया मानो उस परमाणु के गर्भ में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड का दर्शन हो रहा था। उन्होंने बेटा! देखो, समाधि के द्वारा, यन्त्रों के द्वारा उसे जानने का प्रयास किया। तो आज बेटा! मैं तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ। केवल ये कि परमात्मा का विज्ञान इतना अनन्तमयी है, क्या एक-एक परमाणुवाद में ब्रह्माण्ड निहित रहता है इसीलिए इस ब्रह्माण्ड को उन्होंने देखो पिण्ड से उसका समन्वय किया और विचार-विनिमय किया है।

मेरे पुत्रो! हमारे यहाँ नाना ऋषिवर, अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः अन्वेषण करते रहे हैं और विचार-विनिमय करते रहे हैं ''ममत्वाम् लोकाम् हिरण्यम् वृथाः''। हे माता! तू ममत्व को धारण करने वाली है परन्तु जब तू अपने में अपनेपन की आभा को परणित करने लगती है तो ये मानवीयत्व अपनी आभा में सदैव रमण करने लगता है। तो आओ बेटा! देखो, आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जा रहा हूँ। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जा रहा हूँ जहाँ बेटा! देखो, ऋषि अपने में अन्वेषण करते रहे हैं और ऋषि-मुनियों के मध्य में विद्यमान हो करके मानव अपने में मानवीयता की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगता है। तो ज्ञान और विज्ञान अपनी आभा में सदैव रमण करता रहा है।

गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज का जीवन

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के आश्रम में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो मुझे स्मरण आता रहा है, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज इतने तपस्वी थे क्या एक सौ पाँच वर्ष तक उन्होंने बेटा! एक गाड़ी के नीचे अपने जीवन को व्यतीत किया और वह मानो देखो, अपने में निध्यासन करते रहे और मुनिवरो! देखो तपों में परणित होते रहे। **तप क्या है?** मानव की पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, इनके विषयों को बेटा! मन में समावेश करना है और मन को प्राण में समावेश करना है। और प्राणों को विचारों में समावेश करना है। और मुनिवरो! देखो हृदयस्थली में जहाँ ये ब्रह्माण्ड की प्रतिभा निहित रहती है इस हृदय से हृदय का समन्वय करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी का नाम तप कहा गया है।

अनुष्ठान

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर, जहाँ मुनिवरो! देखो, महर्षि प्रह्लाण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य और देखो ब्रह्मचारी वृत्तिका, देवर्षि वृत्ति अस्सुतम् देवर्षि नारद और मुनिवरो! देखो महर्षि श्वेताश्वेतर, अभ्युत ऋषि महाराज, गाड़ीवान वृत्तिका, मेरे प्यारे! देखो महर्षि विभाण्डक, महर्षि वैशम्पायन, ब्रह्मचारी व्रेतकेतु, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ताः, ब्रह्मचारी वृतासुतः, मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषि-मुनि कुछ अन्य ब्रह्म जिज्ञासु थे, कुछ ब्रह्मवेत्ता थे। सर्वत्र मानो देखो, अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से ये प्रश्न किया क्या हे भगवन्! आपको बहुत समय हो गए हैं नाना प्रकार के अनुष्ठान करते हुए। ये अनुष्ठान क्यों किए जाते हैं? तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने ये कहा ''वेदम् ब्रह्माः मृत्यंजम् प्रकाशम् भवितम् ब्रह्मेः'' वेद का ऋषि कहता है कि इसीलिए अनुष्ठान किए जाते हैं कि मानव मृत्यु से पार हो जाए। उसके

जीवन में मृत्यु नहीं आनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक मेरी प्यारी! माता ये चाहती है, मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए और मेरे पुत्र की भी मृत्यु नहीं होनी चाहिए।

मृत्यु की विवेचना

परन्तु प्रश्न अब ये आता है, क्या यह मृत्यु क्या है? क्योंकि जिस वस्तु का निर्माण होता है उसका तो विच्छेद बहुत अनिवार्य होता है, उसका विच्छेद होना है, विकृत होना है और उसमें मानो समावेशता भी होनी बहुत अनिवार्य है। तो इसीलिए वह मृत्यु अमृतम्, देखो इसके लिए मानव पुकार रहा है वो क्या है? मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है ''प्रकाशम् भवितम् ब्रह्मेः अस्सुतम् देवाः'', क्या **प्रकाश का नाम ही तो जीवन है** और अन्धकार का नाम ही मृत्यु कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो एक माता अपने पुत्र के लिए व्याकुल हो रही है और वह व्याकुलता ये है कि मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। परन्तु एक दार्शनिक ज्ञाता, वो कहता है हे माता! तू क्यों रूधन कर रही है? माता कहती है, मेरा पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है। वह कहता है अमृतम्, हे माता! यह आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है? तो बेटा! माता निरुत्तर हो गयी। वह यदि शरीर को अपना पुत्र कहती है तो शरीर ज्यों का त्यों निहित है परन्तु आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्मा को जानती नहीं है, आत्मा कितना विशाल है। मेरे प्यारे! माता निरुत्तर हो जाती है। तो विचार आता है कि मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। अन्धकार का नाम ही मृत्यु है। इसलिए अज्ञान नहीं रहना चाहिए। ज्ञान होना चाहिए, प्रकाश होना चाहिए और उसी प्रकाश में मानव को रत्त रहना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से ऋषि-मुनियों ने कहा, हे प्रभु! हम ये और जानना चाहते हैं आपने जो ये अनुष्ठान किए हैं, ये क्यों किए हैं इतने। आप तो गाड़ी के नीचे ही मानो अपने जीवन को व्यतीत कर रहे हैं। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा, हे प्रभु! हे ब्रह्मचारियो! हे ब्रह्मवेत्ताओ! मैं तो इसका एक ही सहज उत्तर दे सकता हूँ इतना अधिक विशेष तो हम जान नहीं पाए हैं

इस सम्बन्ध में। क्या मानव को जितनी भी आवश्यकता सूक्ष्म हो, मानो उतना ही उसका जीवन महान् बना करता है। और उसके जीवन में मानो देखो, प्रकाश आता है और ज्ञान की अनुभूति होने लगती है और मनस्तत्त्व को मूल्य का समन्वय करते हुए वो अपनी आभा में परणित हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज यह उत्तर दे करके मौन हो गए।

याग द्वारा तरङ्गवाद का यन्त्रों में दर्शन

मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा, प्रभु! विज्ञान में रत्त रहना चाहते हैं। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहता है, ऋषि-मुनियों ने वहाँ से गमन किया। क्योंकि वे शब्द विज्ञान के ऊपर वहाँ से गमन करते हैं और भ्रमण करते हुए बेटा! वह महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ पहुँचे। भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! ऋषियों का स्वागत किया, उचित आसन दिया। वो आसनों पर विद्यमान हो गए। और विद्यमान हो जाने के पश्चात्, उस समय मुनिवरो! देखो महर्षि गाड़ीवान रेवक ने कहा, हे प्रभु! हे भारद्वाजाम्! ''भूतम् ब्रह्मणेः क्रतम्'' प्रभु आपसे हम कुछ प्रश्न करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, प्रभु आप जो प्रश्न करेंगे, जितना मैं जानता हूँ, उसका उत्तर अवश्य दूँगा। क्योंकि ऋषि-मुनियों का जीवन बड़ा निरभिमानी होता है और वह अपनी निरभिमानता से वार्त्ता प्रगट करते हुए कहते हैं, यदि मैं जानता हूँगा तो इसका उत्तर दे सकूँगा। हे प्रभु! यदि नहीं जाना कि ''जनमम् ब्रव्हे क्रतम्'' यदि मैं नहीं जानता हूँगा तो इसका उत्तर नहीं दे सकूँगा। मेरे पुत्रो! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा, प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, क्या तुम तरङ्गवाद के सम्बन्ध में कितना जानते हो? उन्होंने कहा, प्रभु! मेरे आश्रम का एक नियम है क्या मेरी यज्ञशाला में तुम याग करो, क्योंकि याग होता है, मेरे यहाँ। मैं विज्ञान की वार्त्ता जब प्रगट करता हूँ, जब तुम मेरे यहाँ देखो शब्द के ऊपर तुम्हें प्रश्न करना है और तुम मेरे यहाँ याग करो। मेरे प्यारे! देखो, उन ऋषि-मुनियों में कोई ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु बना, कोई यजमान बन करके बेटा! देखो, उन्होंने उनकी यज्ञशाला में याग प्रारम्भ

किया और याग प्रारम्भ करते हुए एक यन्त्र को स्थिर कर दिया। मेरे प्यारे! देखो, जैसे ही वो स्वाहा उच्चारण कर रहे थे उनके स्वाहाओं के चित्र बन करके, मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ चित्रों में उनका दर्शन होने लगा। मेरे प्यारे! देखो, वह अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके द्यौ में गमन करता रहता है। द्यौ में ओत-प्रोत हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि-मुनि बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, भारद्वाज के यहाँ तो बड़ा विशिष्ट विज्ञान है। मानो देखो, जो शब्द अग्नि की धाराओं पर दृष्टिपात होता हुआ, हमें यन्त्रों में दृष्टिपात आ रहा है ये तो हमारा बड़ा सौभाग्य है। महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने, बेटा! याग अपना सम्पन्न किया और सम्पन्न करने के पश्चात् एक पंक्ति लगा करके विद्यमान हो गए।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का विज्ञान

भारद्वाज मुनि ने कहा, प्रभु! आज ''अमृतम् ब्रह्मेः'' उन्होंने कहा कि भगवन्! मेरी विज्ञानशालाओं में आप भ्रमण कीजिए। उनके यहाँ बेटा! एक-एक ऐसे यन्त्र विद्यमान थे—मुनिवरो! देखो, जिन यन्त्रों में एक मानव देखो, एक स्थली पर विद्यमान है और उसके वहाँ से प्रस्थान होने के पश्चात्, मेरे प्यारे! देखो, ढ़ाई घड़ी के पश्चात्, उस मानव का चित्र चित्रावलियों में दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो, ढ़ाई-ढ़ाई घड़ी की आभा में रत्त करने वाला विज्ञान उनके यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान थे। एक रक्त का बिन्दु है और उस रक्त के बिन्दु में मुनिवरो! देखो जो जिस मानव का वो रक्त का बिन्दु है उसे यन्त्र में प्रवेश करो और उस मानव का साक्षात्कार बेटा! एक बिन्दु से दर्शन होता रहता है।

प्रभु का विज्ञान

मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता के गर्भस्थल में, मुनिवरो! देखो, एक बिन्दु होता है और बिन्दु में शिशु होता है। मेरे पुत्रो! देखो, शिशु के ऊपर जब अन्वेषण होता रहता है। तो माता के गर्भस्थल में बेटा! देखो, निर्माणवेत्ता

निर्माण करता रहता है। मुनिवरो! देखो, माता को ज्ञान नहीं हो रहा है, कौन निर्माण कर रहा है, कौन निर्माणवेत्ता है। बेटा! बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दो (72,72,10,202) नाड़ियों का निर्माण हो जाता है। वाह रे! मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में से बेटा! अमृत जा रहा है। अमृत को हम जैसे पुत्र अपने में धारण कर रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो, चन्द्रमा अमृत दे रहा है, सूर्य प्रकाश दे रहा है, अग्नि उष्ण बना रही है, पृथ्वी गुरुत्व दे रही है और वायु प्राण दे रहा है। और मुनिवरो! देखो, अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है–वह देव कितना अनुपम है बेटा! मेरे प्यारे! मेरी प्यारी भोली माता को ज्ञान नहीं है कौन निर्माण कर रहा है। रसना के निचरले विभाग में बेटा! एक चन्द्रकेतु नाड़ी है, उस नाड़ी का समन्वय पुरातत्त्व नाम की नाड़ी से है और पुरातत्त्व नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से है। और लोरियों से पञ्चम नाड़ी चल करके बेटा! माता की नाभि से उन नाड़ियों का समन्वय हो रहा है। और उसी देखो, बाल्य की नाभि और माता की नाभि से, वह अमृत को पान कर रहा है, निर्माण कर रहा है। मेरे प्यारे! उसी से बुद्धि का निर्माण होता है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी का निर्माण हो रहा है। कहीं हृदयस्थली का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का निर्माण हो रहा है।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में, मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपनी विज्ञानशाला में और अपने वेदोक्त मन्त्रों को उद्गीत गाते हुए, ये सर्वत्र बेटा! उन्होंने दिग्दर्शन कराया। नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण हो रहा था। एक-एक रक्त के बिन्दु में चित्रावलियों का निर्माण हो रहा था। मेरे पुत्रो! देखो, विज्ञान अपने में बड़ा सार्थक बना हुआ है। मुनिवरो! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि विचारों का तो बेटा! वन है। मैं इस भयङ्कर वन में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल ये प्रगट करना है कि हमारा वेदोक्त हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है।

महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के विज्ञान का स्त्रोत

मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहते हैं ''ब्रह्मणेः क्रतम्''। मुनिवरो! देखो, भारद्वाज मुनि से ये प्रश्न किया गया क्या हे भगवन्! आपने जो इतना विज्ञान ये जाना है। नाना प्रकार के परमाणुवाद को जाना है। आपके ये यन्त्र कहीं सूर्य की परिक्रमा, ध्रुव की परिक्रमा कर रहे हैं। कहीं मानो, मङ्गल की परिक्रमा हो रही है। ये जो विज्ञान है आपने कहाँ से प्राप्त किया है? तो मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि महाराज मौन हो गए और मौन हो करके यह कहा कि मेरी जो माता है, मुझे ये माता की देन है क्योंकि माता ने मुझे ये पवित्र शिक्षा मुझे प्रदान की है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि भगवन्! वो कैसे है, हमें कुछ वर्णन कराइए। क्या हे प्रभु! एक समय मानो देखो, मेरे पिता का नाम रेवणी भारद्वाज था, मेरा नाम श्वेताश्वेतर भारद्वाज है। मेरे पिता मानो देखो बड़े विशश्चम् ब्रह्मेः देखो, ब्रह्म का चिन्तन करते रहते थे। मानो पञ्च यागों में लगे रहते थे। एक समय मानो देखो, मेरी जो माता का नाम शकुन्तका था और वह माता शकुन्तका अपने में बड़ी विचित्र और मानो देखो वेदोक्त और दद्दडीय गोत्रों में जिनका जन्म हुआ था। आध्यात्मिकवाद में वो रमण करती रहती थीं। उन्होंने उस विद्या का अध्ययन किया जो विद्या राष्ट्र में वैदिक साहित्य में विद्यमान रहती थी। माता के गर्भस्थल में शिशु पनप रहा है। परन्तु माता कहती है ''कत्मोऽसी'' ब्रह्मचारी देखो, उस आत्मा से कहती है, हे आत्मा! जो तू मेरे गर्भस्थल में विद्यमान है, तू कौन है? मानो देखो, इस प्रकार की वार्त्ता जब माता प्रगट कर रही है। माता जब वह देखो, बाल्य का उत्तर प्राप्त नहीं होता तो उस प्राण और अपान को दोनों को एक सूत्र में ला करके, अपनी हृदयस्थली में अपने मनों की प्रवृत्तियों ले जा करके बेटा! उसे योगा स्थलियों में परणित करके अपने अन्तर्हृदय की आत्मा की वार्त्ता प्रगट करती रहती है। हे माँ! तू कितनी विचित्र बन सकती है। मानो देखो तेरी प्रतिभा कितनी विचित्रता में रमण कर रही है। मेरे पुत्रो! देखो ऐसा माता मदालसा करती रहती थी। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, माता कौशल्या का जीवन भी मुझे स्मरण आता रहता

है वह भी इसी प्रकार वार्त्ता प्रगट करती थी। आओ, मेरे पुत्रो! देखो, मैं इन विचारों में ले जाना तुम्हें नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये, मेरे पुत्रो! देखो, ''अमम् ब्रह्माः क्रतम देवाः'' महर्षि भारद्वाज कहते हैं, क्या प्रभु! देखो, माता के गर्भस्थल मैं जब मैं विद्यमान था तो माता मुझे अनुपम शिक्षा देती रहती थी, दर्शनों का अध्ययन करती रहती। वेदों के मन्त्रों का पठन-पाठन करती रहती और वह अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करती रहती थी। मानो देखो उस समय ब्रह्मेः जब मैं इस संसार में आ गया। संसार में जब प्रभु के, माता वसुन्धरा की गोद में आ गया। जननी माता के गर्भस्थल से तो मानो देखो, मेरी एक समय, एक देखो **तीन वर्ष और चार दिवस की आयु** थी, मैं क्रीड़ा कर रहा था। माता ने मुझे प्रातःकाल में भोज कराया परन्तु मैं क्रीड़ा कर रहा था। और देखो, उस समय पिता ने कहा, याग के पश्चात् क्योंकि वह ब्रह्म याग प्रातःकाल होता था। जब पति और पत्नी अपनी एकन्त स्थलियों में विद्यमान होते हैं तो वह मानो देखो, ब्रह्म के सूत्रों का पठन-पाठन करते हुए, अपने में श्रोत्रीय विचारों को ला करके बेटा! ब्रह्म की प्रतिभा का वर्णन करना, उसके विज्ञान को दृष्टिपात करना, वो ब्रह्मयाग है। मेरे पुत्रो! देवत्वम् अग्नि प्रदीप्त करके जब हुत करता है उसको देव याग कहते हैं और वह, उसके पश्चात् पितर याग कहलाता है। पितर याग उसे कहते हैं जहाँ पितर होते हैं और उनसे मानो शिक्षा लेता है, उनको भोज कराता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, हे शकुन्तका! आज हमें पितर याग करना है बहुत समय हो गए हैं पितर याग किए हुए। आज पुनः इच्छा जागरुक हुयी है कि यहाँ जो उनके वंशलज में पिता, महापिता, पड़पिता मानो जो संसार में थे उसको निमन्त्रित किया और निमन्त्रित करके बेटा! उन्हें भोज कराया। और भोज कराने के पश्चात्, उनसे आशीर्वाद लिया और उनसे कुछ ब्रह्म ज्ञान की चर्चाएँ प्रगट कीं। और ब्रह्म ज्ञान की चर्चा प्रगट करते हुए उन्होंने कहा, हे शम्भे! अमृतम्, देखो, आचार्यजनों ने कहा हे रेवणी भारद्वाज! तुम्हारा जीवन महान् है, पवित्र है। तुम्हारा अध्ययन बहुत गम्भीरता में रमण करता रहता है। तुम मानो देखो अपने जीवन को

क्रियात्मकता में परणित करने वाले हो। इसीलिए हमारा अन्तर्हृदय बहुत ही प्रसन्नीय है। हमारा जो गोत्र है यह बड़ा विचित्र गोत्र चला आया है इसमें सब ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मनिष्ठ होते चले आए हैं। मेरे पुत्रो! देखो याग सम्पन्न हो गया। पितरजन अपने ग्रह, अपने-अपने आश्रम को उन्होंने प्रवेश किया। तो मेरे पुत्रो! देखो, रेवणी भारद्वाज ने मेरे से कहा, हे भगवन्! हे बाल्य! तुमने भोज किया अथवा नहीं? तो उस समय मैंने एक वाक्य मिथ्या उच्चारण कर दिया क्या मैंने भोज नहीं किया। देखो, मेरी माता से पिता ने कहा, हे देवी! तुमने बाल्य को भोज नहीं कराया है। मेरे पुत्रो! देखो, माता-पिता अपने में बड़े आश्चर्य में चकित हो गए। और ये कहा, रेवणी ने, हे भारद्वाज! हे श्वेताश्वेतर! हमारा जो ये वंश है ये बड़ा विचित्र है। हमारा जो ये मानो, ये जो रघुवंश है ''अमृताम् भूतम् ब्रह्मणेः क्रतम्'' जैसे रघुवंश परम्परा चली आ रही है ऐसे ही हमारा जो वंश है, यह भारद्वाज कहलाता है और भारद्वाज गोत्रों में देखो, ये जो हमारा गोत्र चल रहा है। ये भारद्वाज का अमृत गोत्र है, इसमें देखो, लगभग दस हजार वंशलज हो गए हैं और इससे पूर्व हमारे जो भारद्वाज गोत्रों का जो निकास हुआ है वो दद्दडीय व मानो देखो, हरिदत्त गोत्रों से विकास हुआ है। और हरिदत्त गोत्रों में देखो, इक्कीस हजार पाँच सो इकसठ देखो वंशलज समाप्त हो गए उनमें भी कोई मिथ्यावादी नहीं हुआ। और देखो हमारा जो गोत्र का, हरिदत्त गोत्र का जो निकास हुआ है, वह देखो अङ्गिरस गोत्र से हुआ है। और अङ्गिरस गोत्र में भी ऐसा नहीं हुआ। मानो उसके एक लाख वंशज समाप्त हो गए उनमें भी कोई मिथ्यावादी नहीं हुआ। और अङ्गिरस गोत्रों को निकास है वह मृचिका गोत्रों से हुआ है। और मृचिका ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा के पुत्र कहलाते थे।

मेरे प्यारे! देखो, जो उन्होंने ये कहा तो ऋषि गहन आश्चर्य में हो गए। और उन्होंने कहा, ''सम्भव ब्रह्मणेः क्रतम देवाः'' हे बाल्य! तुमने ये मिथ्या शब्द क्यों उच्चारण किए। मेरे प्यारे! देखो, माता ने कहा, हे बाल्य! तुम्हें प्रतीत है कि जिस माता के गर्भस्थल से मिथ्यावादी पुत्रों का जन्म होता है उस माता का गर्भाशय दूषित हो जाता है। हे बाल्य मैं दूषित हो गयी हूँ।

मानो वही शब्द, **माता-पिता के शब्द मेरे अन्तःकरण में अङ्कित हो गए।** मानो देखो मैं ''अमृताम् भूतम् ब्रह्मेः लोकाम्'' मानो देखो वह काण्ड समाप्त हो गया। अपनी-अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए।

महर्षि का तत्त्व मुनि महाराज के विद्यालय में अध्ययन के लिए प्रवेश

जब मुझे देखो विद्यालय में वेदारम्भ के लिए प्रारम्भ किया, महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहाँ तो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज दो सौ चौरासी वर्ष के ब्रह्मचारी थे उस समय, जिस समय मेरा प्रवेश कराया गया। और मैंने जो वेद की विद्या का अध्ययन प्रारम्भ किया तो मैंने परमाणुवाद के ऊपर मेरा अन्वेषण होने लगा। मेरी विज्ञान में गति होती रही और मैं आश्रम में करता रहा। क्योंकि उनके यहाँ नाना प्रकार की विज्ञानशालाएँ विद्यमान थीं। उनमें मैं विद्यमान हो करके परमाणुवादों के ऊपर अन्वेषण करता रहा। विचार-विनिमय करता रहा। परन्तु देखो जब ''ब्रह्मेः क्रतम देवाः'' देखो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहीं एक यन्त्र का निर्माण हुआ था जिस यन्त्र में मैं विद्यमान हो करके लोक-लोकान्तरों की यात्रा करते रहे। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि ने कहा, हे प्रभु! हे गाड़ीवान्! एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने सब ब्रह्मचारियों की पंक्ति लगा करके ये कहा, क्या मेरे आश्रम में एक यन्त्र का निर्माण हुआ है जो अन्तरिक्ष की यात्रा करेगा और तुम्हें इस यात्रा में जाना है। कौन ब्रह्मचारी ऐसा है जो उसमें गमन करेगा? मानो देखो, मैं उसमें एक विश्वसनीय था और मैं यन्त्र में विद्यमान हो करके मानो देखो, ऋषि के आश्रम से वो यान जब उड़ान उड़ता है, वो यन्त्र जब उड़ान उड़ने लगा तो सबसे प्रथम आचार्य के आश्रम से उड़ान उड़ी तो सबसे प्रथम वह मानो चन्द्रमा में पहुँचा और चन्द्रमा से उड़ान उड़ी तो शुक्र में चला गया। शुक्र से उड़ान उड़ी तो मङ्गल में चला गया। मङ्गल से उड़ान उड़ी तो रोहिणीकेतु मण्डल में चला गया। रोहिणीकेतु से उड़ान उड़ी तो मृचिका मण्डल में प्रवेश हो गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो अरुन्धती मण्डल में चला गया। अरुन्धती मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो वसिष्ठ

मण्डल में प्रवेश हो गया। और वसिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो विश्वकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया। और विश्वकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो करसुत मण्डल में प्रवेश हो गया। और करसुत मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो मूल नक्षत्र में चला गया। और मूल नक्षत्र से उड़ान उड़ी तो मुनिवरो! देखो वो ध्रुववेतु मण्डल में प्रवेश कर गया। और ध्रुववेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! देखो वह कातुक मण्डल में प्रवेश हो गया। कातुक से उड़ान उड़ी तो मुनिवरो! देखो वह पुष्प नक्षत्र में चला गया। मेरे पुत्रो! देखो, बहत्तर लोकों का भ्रमण करके वह यान पुनः ऋषि के आश्रम में प्रवेश हो गया।

मेरे प्यारे! देखो, वह विचारम् ब्रहे विज्ञान अपनी परावृत्तियों में रत्त हो रहा है। तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, गाड़ीवान रेवक से, क्या मानो देखो जिस समय मैंने, मेरा परीक्षाफल आता, वेदों का अध्ययन करता हुआ, परमाणुवाद में मैं रत्त होता रहा। जब परीक्षाफल आता तो किसी में मानो प्रथम श्रेणी में आता। उनसे मानो देखो, कुछों से मैं अग्रणीय बन जाता और कुछ मानो देखो, द्वितीय श्रेणी में प्रवेश करता रहा। मेरी विद्या मानो देखो पराकाष्ठा पर चली गयी। तो उस समय जब मैंने अपनी विद्या सम्पन्न की, जितनी विद्या मुझे विद्यालय में दी जा सकती थी। वह विद्या मैंने सर्वत्र मानो पारायणता में परणित कर लेई। और उसे अपने में ग्रहण कर लिया।

महर्षि तत्त्व मुनि महाराज द्वारा दीक्षा

मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज कहते हैं, प्रभु! जब मुझे किसी ने ये कहा, क्या तुम्हारा देखो दीक्षान्त तुम्हें होना है, तुम्हें दीक्षित होना है। और तुम्हारा विद्या काल समाप्त हो गया है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, ब्रह्मचारी आओ, मैं अब तुम्हें कुछ उपदेश देता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने, तत्त्व मुनि महाराज ने मुझे दीक्षित बनाया और दीक्षा देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारी! जिस विद्यालय में तुमने अध्ययन किया, इस विद्यालय की स्थली को तुम्हें पवित्र बनाना है। और जिस स्थली से तुमने वेदों का अध्ययन किया है, वेदों में जितना ज्ञान और विज्ञान तुमने जाना है इसको तुम्हें क्रियात्मकता

में लाना है। हे ब्रह्मचारी! तुम्हें ब्रह्मवर्चोसि बनना है, तुम्हें ब्रह्मचरिष्यामि बनना है। मानो देखो, ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं प्रकृति को, जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। इन दोनों प्रकार के जगतों को जान करके तुम्हें तपस्या करनी है। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारी! अब तुम विद्यालय को त्यागने की स्थितियों में विद्यमान हो गए हो। अब तुम्हें ये विद्यालय त्याग करके, जो विद्या तुमने अध्ययन की है इस विद्या को तुम्हें क्रियावाहन देना है। और क्रियात्मकता में रमण करते हुए मानो तुम्हें देखो इस विद्या के ऊपर वेद की पवित्र विद्या को तुम्हें विज्ञान में आश्रित बनानी है। मेरे प्यारे! देखो, उस समय आचार्य ने मुझे उपदेश दिया, क्या तुम्हें ब्रह्मचारी रहना है। ब्रह्मचरिष्यामि बनना प्रत्येक श्वास के साथ में। तुम्हें उस श्वास का मनका बना करके तुम्हें ब्रह्मसूत्र में पिरो लेना है क्योंकि ब्रह्मसूत्र की ही तुम्हें माला बनानी है और उस माला को जो ब्रह्मचारी अपने में धारण कर लेता है, वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उनके चरणों की वन्दना की और ये कहा, प्रभु! आपका आशीर्वाद चाहिए। आपने जो मुझे देखो, विद्याएँ दी हैं, उस विद्या को मैं क्रियात्मकता में लाऊँगा और तपस्या में परणित हो जाऊँगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ये वाक्य उच्चारण करके चरणों की वन्दना करते हुए कहा, मैंने ऋषिवर विद्यालय को त्याग दिया। और विद्यालय को त्याग करके मैंने दीक्षा ले करके आचार्य से, ये मैंने एक अनुसन्धानशाला अथवा एक मैंने देखो ये यज्ञशाला का निर्माण किया है। जहाँ मैं विज्ञान में रत्त रहता हूँ और विज्ञान के तथ्यों को जानता रहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन कराया तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गए।

शिक्षा का मुख्य स्त्रोत

महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि ये मेरी माता की देन है। माता ऐसा विश्वविद्यालय है जो माता अपने गर्भस्थल में शिक्षा प्रदान कर देती है, वो

विद्यालय में नहीं प्राप्त होती। आचार्यों के द्वारा नहीं प्राप्त होती। और जो आचार्यों के द्वारा शिक्षा प्राप्त हो जाती है, वह मानो देखो सम्पर्क में नहीं हुआ करती है। इसीलिए देखो माता ही ''अमृताम् भूतम्'' वह अमृत को देने वाली है। मानो देखो, उसी के गर्भस्थल में पनपते रहते हैं। वह माता वसुन्धरा के रूप में विद्यमान है। मेरे प्यारे! हमारी तीन माता होती हैं। एक मानो देखो जननी माता और द्वितीय पृथ्वी माता और तृतीय मुनिवरो! देखो वह परमपिता परमात्मा जो माता जिसके गर्भ में ये सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो देखो वशीभूत रहता है।

संसार में आने का उद्देश्य

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये प्रगट करने के लिए आया हूँ। एक परिचय देने के लिए आया हूँ कि हम अपने में विज्ञानवेत्ता बन करके और अपने में ही अपनेपन का ध्यान करके अपने अन्तर्हृदय में प्रवेश हो जाएँ। मेरे पुत्रो! देखो उसमें प्रवेश हो करके हम अपने मनस्तत्त्व को जान करके इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। तो बेटा! हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। क्या परमपिता परमात्मा वो कैसा है। जितना भी ये जड़ जगत और चेतन्य जगत है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में बेटा! देखो, मानो वह परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महत्ती और अनन्तता को सदैव जानते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यही हमारे इस संसार में आने का उद्देश्य है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की महत्ती को जानते हुए ज्ञान और विज्ञान की ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ते हुए इस संसार से पार हो जाएँ। मेरे प्यारे! जो मान अपमान वाला जगत है—कोई किसी का मान कर रहा है तो किसी का अपमान कर रहा है, इस सागर से हम ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाएँ। और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो करके मेरे प्यारे! अपने में ही प्रभु का दर्शन करते रहें और मानवीय दर्शनों में सदैव निहित रहें।

माता-पिता की देन

मेरे पुत्रो! देखो, आज का विचार क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने कहा, क्या हे प्रभु! ये जो मुझे विज्ञान की देन है ये मेरी माता की और पिता की देन है। वो ये उच्चारण नहीं कर सकते थे ''अमृताम्'' देखो, मेरा गर्भाशय दूषित हो जाता है। तो मैं इस विद्या में नहीं जा सकता। क्योंकि हमारे वंशलजों में तो आध्यात्मिकवेत्ता और ऋषि होते चले आए हैं। मैंने इस विज्ञान की शिक्षा को क्योंकि वह माता की देन है और माता ने, पिता ने मुझे धिक्कारा, बाल्यकाल में और वही संस्कार मेरे अन्तःकरण में अङ्कित हो गए। और वही विद्या मैंने अध्ययन करना प्रारम्भ किया। मैंने इसीलिए देखो विज्ञानशाला का निर्माण किया और विज्ञानशाला में सदैव रत्त रहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से सर्वत्र अपनी गाथा का वर्णन कराया। और ये कहा कि हे प्रभु! ऐसा ही मानव का जीवन है। जैसे मानो देखो, प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार ये पृथ्वी मानो देखो ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है।

आओ, मेरे प्यारे! एक-दूसरे में ओत-प्रोत होने वाला ये जगत अपने में महानता को प्राप्त होता रहता है और विचित्रता में रमण करता रहता है। आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, हम परमपिता परमात्मा की महत्ती को जानते हुए और उसके ज्ञान-विज्ञान में रत्त रहते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। आज का वाक्य, हमारा ये क्या कह रहा है। ''अजनम् ब्रह्मेः क्रतम्'' मानो ये परमपिता परमात्मा का ये अमूल्य जगत है। जड़ और चेतना में निहित रहने वाला है।

ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। **आज के वेद मन्त्रों का अभिप्रायः** ये क्या हम

परमपिता परमात्मा की महत्ती और विज्ञान को जानते रहें। अन्वेषण करते रहें। विचार-विनिमय करते रहें। अति आभा में ही अपनेपन को दृष्टिपात करना हमारा कर्त्तव्य है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् दधि ब्रह्माः आपाः''

''ओ३म् यशश्चीर गतमः आभ्याहम् रथश्च सञ्जानम् व्रहीतम् यशश्याः रेवहम् आपाः''

महर्षि महानन्द मुनि जी—अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव—आनन्दित रहो!

दिनाँक : 8 अप्रैल, 1990

स्थान : श्री महेन्द्र सिंह
प्रतापनगर, मेरठ

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं—

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. आत्मा के ज्ञान में ही अहिंसा परमोधर्म है।
2. आज हम वेद के प्रकाश में रमण करें, आत्मा के प्रकाश को जानें, आत्मा ही हमारा प्रकाशक देव है।
3. जैसा यह ब्रह्माण्ड है ऐसा ही हमारा यह पिण्ड कहलाया गया है।
4. हमारे इस मानव शरीर में भी अन्तरिक्ष होता है, आकाश होता है।
5. ज्ञान का माध्यम तो मनिराम है और प्रयत्न का माध्यम प्राण है।
6. अधिक कामनाओं का उत्पन्न हो जाना ही तृष्णा कहा जाता है।
7. ममता से भरा हुआ जो क्रोध है वह मानव के जीवन का विनाश कर देता है।
8. क्रोध का सम्बन्ध नाग-प्राण से होता है।
9. जितने विचार मानव के सुन्दर होते हैं, महान् होते हैं उतना ही वायुमण्डल पवित्र होता है।
10. मानव जो भी आहार करता है इसको निगलने का कार्य अपान का होता है।
11. उदान जो भी हम आहार करते हैं नाना प्रकार के पदार्थों को यह उन्हें तपाता है, पचाता है, रस बना देता है।
12. व्यान का जो क्षेत्र है वह कर्म से उपरला क्षेत्र है।
13. वास्तव में योगी वह होता है जो अपने मन को अपने अधिकार में कर लेता है।
14. योगी उस काल में बनोंगे जब अन्तःकरण को तपा दिया जाएगा।
15. अन्तःकरण को ज्ञानरूपी अग्नि में तपाना है।
16. मन से शक्तिशाली प्राण है।
17. मन और प्राण की साम्य अवस्था हो जाती है वहीं मानव का अन्तःकरण तपने लगता है।
18. मन और प्राण दोनों का एकाग्रह करने का नाम ही साधना कहलायी जाती है।

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है–

1. श्रीमति सुमित्रा त्यागी, मकनपुर, गाजियाबाद	5000 रुपये
2. श्री पवन त्यागी, वसुन्धरा, गाजियाबाद	2100 रुपये
3. श्री राजेन्द्र शर्मा, मिर्जापुर	2100 रुपये
4. श्रीमति शन्नौ और श्री मोहित त्यागी, मुजफ्फरनगर	2100 रुपये
5. श्री वीरसिंह, मुजफ्फरनगर	1500 रुपये
6. श्री तेजपाल जी, कासिमपुर	1100 रुपये
7. श्री राजकिशोर जी, मकनपुर, गाजियाबाद	1100 रुपये
8. श्री सूरज पाल मलिक, मुजफ्फरनगर	1100 रुपये
9. श्री गौतम, कालंद	1100 रुपये
10. श्रीमति रेनू एवम् परिवार, नई दिल्ली	1100 रुपये
11. श्री मूलचंद जी, मुराद नगर	1100 रुपये
12. श्री कालूराम त्यागी एवम् श्री गुरवचन शास्त्री, मुजफ्फरनगर	1100 रुपये
13. श्री योगेन्द्र, बुलन्दशहर	1100 रुपये
14. श्रीपाल त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	1100 रुपये
15. श्रीमति सुमन कुशवाहा, मेरठ	1100 रुपये
16. श्रीमति बाला, दिल्ली गेट, नई दिल्ली	1100 रुपये
17. श्रीमति सीमा, अंसल टॉवर, मेरठ	1100 रुपये
18. श्री तेजस शर्मा सुपुत्र श्री निमेश शास्त्री, अंसल टॉवर, मेरठ	1100 रुपये
19. श्रीमति ज्योतिका, दिल्ली	1100 रुपये
20. श्री अनिकेत कादीयान, मेरठ	1100 रुपये
21. श्री अमित त्यागी जी, वसुन्धरा, गाजियाबाद	1000 रुपये
22. श्री कैलाश पाल, यमुना विहार, दिल्ली	1000 रुपये
23. श्रीमति बाला विद्यानन्द त्यागी, गाजियाबाद	1000 रुपये
24. श्रीमति अनुराधा, रिवाड़ी	1000 रुपये
25. श्री कृष्ण लाल बत्रा, करनाल	1000 रुपये
26. श्री विपिन कुमार धामा, बागपत	900 रुपये

27. श्री अरविन्द कुमार, पिंकी बेबी, भावना कुमारी, नीरज कुमार इत्यादि मोदीपुरम्, मेरठ 521 रुपये
28. श्री संजय त्यागी, बरनावा, मेरठ 500 रुपये
29. श्री मुक्तियार सिंह, बिजनौर 500 रुपये
30. श्री मंगल सेन सुपुत्र श्री दीप चन्द 500 रुपये
31. श्री जशपाल राठी, मुजफ्फरनगर 500 रुपये
32. श्रीमति शंतरीश देवी, सहारनपुर 500 रुपये
33. श्री महिपाल, गलहैता 500 रुपये
34. श्रीओम 500 रुपये
35. श्री विरेन्द्र त्यागी, शाहदरा, दिल्ली 500 रुपये
36. श्री अनुराग, जीवन, गुलिया 500 रुपये
37. श्री मोहित त्यागी, मोदीनगर 500 रुपये
38. श्री सुरेश पाल जी, मुजफ्फरनगर 500 रुपये
39. श्री विनोद त्यागी, वसुन्धरा, गाजियाबाद 500 रुपये
40. श्रीमति अनुराधा तोमर, दिल्ली गेट, दिल्ली 500 रुपये
41. श्री इकबाल सिंह तोमर और परिवार, बड़ौत 500 रुपये
42. श्री यशपाल सिंह, ग्राम जसौसा, मेरठ 500 रुपये
43. श्रीमति कमलेश त्यागी, मुजफ्फरनगर 500 रुपये
44. श्री आयुष वत्स सुपुत्र श्री डी.के. शर्मा, दिल्ली 500 रुपये
45. श्री प्रताप सिंह, मेरठ 350 रुपये
46. श्री हरीश कुमार, पाण्डव नगर, नई दिल्ली 300 रुपये
47. मास्टर शिवराज त्यागी और श्री विपिन त्यागी, वसुन्धरा 251 रुपये
48. ठाकुर प्रेमपाल सिंह राघव, मेरठ 251 रुपये
49. श्री धर्मवीर त्यागी, मोदीनगर 251 रुपये
50. श्री मंयक, मोदीनगर 251 रुपये
51. श्री आदेश शास्त्री जी, गाजियाबाद 250 रुपये
52. श्रीमति मानसी धर्मपत्नी श्री मनजीत 250 रुपये
53. श्री धर्मवीर सैनी, मुजफ्फरनगर 250 रुपये
54. श्री योगेश सैनी, रूड़की 205 रुपये
55. श्री शिवम् मलिक, मुजफ्फरनगर 201 रुपये

56. श्री सुनील, अजीतपुर	201 रुपये
57. श्री सत्यप्रकाश, खरखौदा	200 रुपये
58. श्री वीर सिंह त्यागी, खरखौदा	200 रुपये
59. श्री ब्रह्मवेद त्यागी, खरखौदा	200 रुपये
60. श्री हरीशंकर भारद्वाज, मोदीनगर	200 रुपये
61. श्री यादराम सुपुत्र श्री बलजीत, मेरठ	200 रुपये
62. मि. पुष्पा, पंचलोक, लोनी	200 रुपये
63. श्री राजेन्द्र सिंह, कड़कड़ी	200 रुपये
64. श्री हरीश त्यागी, गाजियाबाद	200 रुपये
65. श्री विजय कुमार, करनाल	200 रुपये
66. श्री लोकेश, पुडार	200 रुपये
67. श्री समरपाल, काकड़ा	150 रुपये
68. श्री रोहताश जी, मवाना	101 रुपये
69. श्री प्रमोद, बरनावा, मेरठ	101 रुपये
70. श्री सर्वेश, मेरठ	101 रुपये
71. श्री अरूण, बरनावा, मेरठ	101 रुपये
72. श्री बबलू, बरनावा, मेरठ	101 रुपये
73. श्री सुरेश चन्द, चाँदयान	101 रुपये
74. श्री अशोक त्यागी, भूमर	101 रुपये
75. श्री वैभव त्यागी, बरनावा, मेरठ	101 रुपये
76. श्रीमति प्रियंका त्यागी, निवाड़ी	101 रुपये
77. श्री सलेक चन्द, बरनावा, मेरठ	101 रुपये
78. श्री वैदिक, लोनी बार्डर	100 रुपये
79. श्री देवशरण त्यागी, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
80. श्री ईश्वर चन्द त्यागी, मुजफ्फरनगर	100 रुपये
81. श्री रमेश चन्द, फफून्डा	100 रुपये
82. श्री ओंमकार, फफून्डा	100 रुपये
83. श्रीमति राजवती, खिवाई	100 रुपये
84. श्री देवराज त्यागी, बुढ़ाना	100 रुपये
85. श्री मूलचंद त्यागी, मेरठ	100 रुपये

86. श्री विक्रम सिंह, बागपत	100 रुपये
87. श्रीमति ललिता, बिहुनी	100 रुपये
88. श्री स्वराज त्यागी, बरनावा, मेरठ	100 रुपये
89. श्री रौनित, बड़ौत	100 रुपये
90. मि. मंजू, मुरादनगर	100 रुपये
91. श्री कुलदीप, कासिम खेड़ी	100 रुपये
92. श्री सरदेश त्यागी, हापुड़, उ.प्र.	100 रुपये
93. श्री सोनू कुमार, अमीनगर सराय	100 रुपये
94. श्रीमति रीतू त्यागी, वसुन्धरा, गाजियाबाद	100 रुपये
95. श्री राजेन्द्र त्यागी, मेरठ	100 रुपये
96. श्री एस.के. शर्मा, मेरठ	100 रुपये
97. श्रीमति प्रभा, कमाला	100 रुपये
98. श्री राजपाल वानप्रस्थी जी, सरधना	100 रुपये
99. श्री ब्रह्मसिंह, सिथरी	50 रुपये
100. श्री सुखवीर, शामली	50 रुपये
101. डॉ. वीर संघाई, काकड़ा	50 रुपये
102. श्री आर्यन, मुजफ्फरनगर	50 रुपये
103. श्रीमति आयुषी, ग्राम सुवैदी	50 रुपये
104. श्रीमति हेमवती, बरनावा, मेरठ	50 रुपये

सभी उपरोक्त दान दाताओं का समिति हृदय से आभार प्रकट करती है जिन्होंने पूज्यपाद-गुरुदेव की अमृतवर्षा को निरन्तर प्रवाहित होने के लिए अत्यन्त उदारता और समर्पण भाव से समिति का सहयोग किया है जिससे कि जन-कल्याण में पूज्यपाद-गुरुदेव की अमृतवर्षा निरन्तर समाज का उत्थान करने में प्रकाशमान बनी रहें। और सभी श्रद्धालुओं को परिवार सहित जीवन में सुख, शान्ति व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	150.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें। जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हमें विचारना है कि हम सर्वत्र प्रभु को दृष्टिपात् करें, कण-कण में जब हम प्रभु को दृष्टिपात् करते हैं तो मानव पाप-कर्म नहीं करता। मानव पाप-कर्म उस काल में करता है जब परमात्मा को अपने से दूर कर देता है और दूर क्यों कर देता है—केवल अज्ञानता के वश क्योंकि वह प्रभु को जानता नहीं। जो मानव प्रभु को जानता है वह पाप नहीं करता, पाप वही मानव किया करता है जो प्रभु से दूर हो जाता है। जो प्रभु को कण-कण में, मनों में, चक्षुओं में, श्रोतों में, प्रत्येक इन्द्रिय में प्रभु की प्रतिभा स्वीकार करता है। जिसने जो वस्तु बनाई है उसमें वह रमण भी कर रहा है और जब मानव को यह निश्चय हो जाता है कि वहाँ मानव पाप नहीं करता।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 579
अप्रैल 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-04-2021
Published on 5th day of the same month